बपतिस्मे की समझ, विश्वास और संकल्प

"ज़्योंकि खतना करानेवाले आप तो, व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुज़्हारा खतना कराना इसलिए चाहते हैं, कि तुज़्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। ज़्योंकि न खतना, और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि" (गलातियों 6:13-15)।

परमेश्वर की नज़र में शारीरिक कार्यों का महत्व है। यह इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि, व्यवस्था के अधीन, खतनारहित पुरुष को लोगों में से निकाल दिया जाता है (उत्पज़ि 17:14)। परन्तु खतना होने के बावजूद भी जिस पुरुष का जीवन सही नहीं होता था उसे खतना रहित ही माना जाता था (रोमियों 2:25)। इसी प्रकार बपतिस्मे का महत्व तभी है यदि हम इससे जुड़े हुए आत्मिक सिद्धांतों का पालन मन से *करते* हैं। इसमें न केवल हमारे शारीरिक कार्य बल्कि मन के कार्य भी शामिल हैं।

परमेश्वर ने अपने साथ हमारे सज़्बन्ध में कहीं भी निरर्थक शारीरिक कार्यों की शर्त नहीं रखी है अर्थात कार्यों के साथ-साथ वह हमारे मन को भी देखता है। शमूएल ने एलीयाब के रूप और कद को देखकर गलत निष्कर्ष निकाला था कि परमेश्वर एलीयाब को इस्राएल का राजा बनाने के लिए चुन रहा है। परमेश्वर ने उसे बताया, कि "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, ज़्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; ज़्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (1 शमूएल 16:7)।

परमेश्वर हमसे मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हुए अर्थात एक नये जीवन की इच्छा करता है (गलतियों 6:14, 15)। यदि बपतिस्मा लेते समय हम नये जीवन में प्रवेश नहीं करते हैं, तो हमारे बपतिस्मे का कोई महत्व नहीं है; ज़्योंकि बपतिस्मे से मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के बाद नया जीवन होना चाहिए (रोमियों 6:4)।

पौलुस का जीवन इस परिवर्तन का एक सज़्पूर्ण उदाहरण है। बपतिस्मा लेकर उसने अपने पुराने व्यज़्तित्व को मार दिया और फिर यीशु के लिए नया जीवन जीने लगा। रोमियों 6:4-6 वह हमें बताता है:

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। ज़्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। ज़्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।

पौलुस ने इसे ऐसे लिखा, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो *जीवित हूं,* तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया'' (गलतियों 2:20)।

हमें ज़्या जानना आवश्यक है

ज़्योंकि प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीही बनने वाले लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया था जिस दिन उन्हें यह पता चला था कि बपतिस्मा लेना आवश्यक है, इसलिए कुछ लोगों का निष्कर्ष है कि हमारे लिए इतना जानना ही काफी है कि परमेश्वर ने बपतिस्मे की आज्ञा दी है। परन्तु इससे अधिक सिखाया गया था, जिसका अर्थ यह है कि बपतिस्मा लेने वालों को इससे अधिक पता होना चाहिए। नीचे कुछ सच्चाइयां दी गई हैं जो पुरुषों तथा महिलाओं को यीशु के चेले बनने के लिए समझाने हेतु समझाई गई थीं:

1. *सच्चा परमेश्वर एक ही है* (प्रेरितों 3:13; 14:15; 17:23–31)। यहूदियों में लोगों को उद्धार की बात समझाने के लिए, इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर का प्रचार किया गया था। बाद में, पौलुस ने अन्य जातियों में आकाश और पृथ्वी बनाने वाले जीवित परमेश्वर का प्रचार किया।

2. *यीशु प्रभु और मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है।* (देखिए प्रेरितों 2:36; 4:10, 11; 5:42; 9:20, 22; 10:36; 17:3; 18:5, 28.) आत्मिक जीवन इस विश्वास पर आधारित है कि यीशु ही मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 20:30, 31)।

3. *उद्धार प्रभु के वचन से मिलता है* (प्रेरितों 11:14; 16:32; 2 तीमुथियुस 4:2 को भी देखिए)।

4. *यीशु उद्धारकर्ज़ा है।* पूरे सुसमाचार का प्रचार किया गया था जिसमें यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान भी शामिल था (देखिए प्रेरितों 2:32; 8:5, 25, 35; 14:7, 21; 16:10; 1 कुरिन्थियों 2:1, 2; 15:1–4)।

5. *यीशु के बिना हम खोए हुए हैं और हमें उद्धार की आवश्यकता है* (प्रेरितों 4:10–12)।

6. *हमें मन फिराना, अर्थात अपने जीवनों को बदलना चाहिए* (प्रेरितों 2:38; 3:19; 17:30)।

7. *हमारे पाप बपतिस्मा लेने पर क्षमा होते हैं* (प्रेरितों 2:38; 22:16)।

8. *परमेश्वर के राज्य की सच्चाई* का प्रचार किया गया था (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:25; 28:23, 31)।

इथियोपिया के खोजे को बपतिस्मे से पहले ज़्या पता चल सकता था? (देखिए

प्रेरितों 8:26-39.) फिलिप्पुस ने उसे यशायाह 53 से मसीह के बारे में बताया। यीशु के बारे में उसने इसी भविष्यवाणी से बताया था: ''वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया'' (आयत 5); ''यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (आयत 6); ''जब तू उसका प्राण दोषबलि करे'' (आयत 10); ''मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा'' (आयत 11); ''तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया'' (आयत 12)।

फिलिप्पुस ने उसे वही वचन अर्थात ''परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार'' (प्रेरितों 8:12) सुनाया होगा जो उसने सामरिया में सुनाया था। संक्षेप में, उसने ''उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' था (प्रेरितों 8:35)।

परिणाम यह हुआ कि इथियोपिया का वह खोजा बपतिस्मा लेना चाहता था। हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसे समझ आ गई थी कि यीशु ही मसीह है जो उसके पापों के लिए मरा था। उसे पता चल गया था कि मसीह के राज्य में प्रवेश करने के लिए उसे नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:5)। वह मसीह के पीछे चलने की प्रतिज्ञा करना और बपतिस्मा लेकर यीशु की मृत्यु के द्वारा अपने पापों की क्षमा चाहता था। निश्चय ही मसीही बनने के इच्छुक हर व्यक्ति को इन बातों का पता होना चाहिए।

हमें क़्या विश्वास करना चाहिए

उद्धार पाने के लिए हमें बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। उद्धार पाने के लिए जिस-जिस बात पर विश्वास करने की आवश्यकता है, उसी बात पर बपतिस्मा लेने के लिए भी विश्वास होना आवश्यक है। हमें निम्न बातों पर विश्वास करना चाहिए:

> हम पापी हैं (1 तीमुथियुस 1:15)।
> परमेश्वर है और वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है (इब्रानियों 11:6)।
> यीशु ''मैं हूं'' ही है।[1]
> यीशु ही मसीह (यूहन्ना 20:30, 31) और प्रभु (प्रेरितों 2:36) है, जिसका अर्थ यह है कि हम वही करें जो वह कहता है (मत्ती 7:21; लूका 6:46)।
> यीशु के वचनों (यूहन्ना 5:47; 12:49, 50) और सुसमाचार (मरकुस 16:15,16; रोमियों 1:16; इफिसियों 1:13) पर विश्वास करना आवश्यक है।
> यीशु के बारे में गवाही (यूहन्ना 17:20; 2 थिस्सलुनीकियों 1:10) और राज्य के सम्बन्ध में दी गई शिक्षा (प्रेरितों 8:12) पर विश्वास करना आवश्यक है।
> यीशु जी उठा है (रोमियों 10:9)।
> यीशु अपने लहू के द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित है (रोमियों 3:24, 25)।
> परमेश्वर हमारे जीवनों में काम करता है (कुलुस्सियों 2:12)।

परमेश्वर ने चुन लिया है कि हम *क़्या* विश्वास करें, परन्तु उसे हमें यह समझाने की आवश्यकता नहीं है कि उसने यह *क़्यों* चुना है कि हमें *क़्या* विश्वास और *क़्या* काम करना

चाहिए। हो सकता है कि हमें कभी भी यह पता न चले कि उसने हमारे लिए यीशु और उसके लहू में विश्वास करने या हमारे लिए क्षमा पाने के लिए मन फिराने, अंगीकार करने और बपतिस्मे को ज़्यों चुना है। हमें यह पूछने की आवश्यकता नहीं है कि उसने ऐसा *ज़्यों* चाहा। बल्कि हमें विश्वास से वह कार्य करना चाहिए जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें।

हमें ज़्या संकल्प लेना आवश्यक है

एक नई सृष्टि बनने का

हमें नये लोग बनना है जो अपने आस पास के दुष्ट संसार से अलग हों। हमने यीशु की सेवा में जीवित बलिदानों के रूप में अपनी देहों को दे दिया है। पौलुस ने कहा था, ''ज़्योंकि न खतना, और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि''(गलातियों 6:15)। उसने यह भी लिखाः

> इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओः यही तुज़्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुज़्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुज़्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों 12:1-2)।

> सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं (2 कुरिन्थियों 5:17)।

मन से आज्ञा मानने के परिणामस्वरूप बपतिस्मे के समय यह नई सृष्टि और अपना बलिदान होता है (रोमियों 6:4-7, 17, 18)। हमारी ओर से कोई शारीरिक कार्य जो मन से न किया गया हो, काफ़ी नहीं है। जैसे किसी शराबी को प्रार्थना भवन के सामने वाले द्वार से प्रवेश कराकर पिछले द्वार से निकालने पर उसकी शराब नहीं छूट जाती वैसे ही केवल पानी में डूबने से हम बदल नहीं जाते। हम नई सृष्टि तभी होते हैं यदि बपतिस्मा लेते समय हमने अपने मन को बदला हो।

बपतिस्मे के संदर्भ में (रोमियों 6:3-7) पौलुस ने इस तरह व्यज़्त कियाः ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए'' (रोमियों 6:17, 18)।

परमेश्वर चाहता है कि हम अपने पुराने चाल-चलन को उतारकर नये को पहन लें। कुलुस्सियों 3:10 कहता है: ''और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है।''

यीशु को जानकर, हमें समझ आ जानी चाहिए कि हमारे मसीही बनने पर पाप के कार्य अतीत की बात हो जाएं। इफिसियों 4:20-24 कहता है:

> पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। बरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर *के अनुसार* सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।

नवजात शिशुओं को बपतिस्मा देने के साथ समस्याओं में से एक यह है कि बच्चे को बपतिस्मे से होने वाले परिवर्तन की समझ नहीं आ सकती अर्थात वह अपने आपको बदल नहीं सकता। वह मन से आज्ञा नहीं मान सकता, क्योंकि उसे यह समझ ही नहीं है कि बपतिस्मा मन के बदलने के लिए है।

जब हम उस उद्धार की इच्छा करते हैं जो मसीह में है, तो हमें उसकी ओर गंभीर मन से क्षमा पाने की इच्छा से आना चाहिए। हमें बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े जाने के समय उसके लिए नई सृष्टि बनने का संकल्प लेना चाहिए। यदि बपतिस्मा लेने का हमारा उद्देश्य इससे कम है, तो हम बपतिस्मे के अर्थ को नहीं समझ रहे हैं।

चेला बनने के लिए

यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर उसके चेले बनने वालों की तरह, यीशु से बपतिस्मा लेने वाले भी उसके चेले बन गए थे (यूहन्ना 4:1)। "चेले" (यू.: *mathetes*) शब्द का इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया जाता है जो कि इसी से उसकी शिक्षा को मानने के लिए सीख रहा होता है। एक व्यक्ति के नाम में बपतिस्मा लेने का अर्थ यह था कि बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति की शिक्षा को स्वीकार कर रहा था और उसका अनुयायी बन रहा था।

1 कुरिन्थियों में पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया में पाई जाने वाली फूट मिटाने की कोशिश कर रहा था। बहुत से सदस्य कह रहे थे कि वे पौलुस, अपुल्लोस और कैफा (अर्थात पतरस; देखिए यूहन्ना 1:42) जैसे अलग-अलग प्रसिद्ध मसीहियों के अनुयायी हैं (1 कुरिन्थियों 1:10-16)। पौलुस ने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा लिया था (1 कुरिन्थियों 1:13)। कहने का अभिप्राय यह है कि यदि उन्हें पौलुस के नाम से बपतिस्मा नहीं मिला था तो फिर उन्हें यह दावा नहीं करना चाहिए कि वे पौलुस के अनुयायी हैं।

जब हम यीशु के नाम से बपतिस्मा लेते हैं, तो हमें यह अहसास होना चाहिए कि हम उसके अनुयायी हैं अर्थात वह हमारा प्रभु है और हम उसके सेवक बन रहे हैं। अब हम पाप की सेवा नहीं करेंगे बल्कि इसके बजाय, यीशु की सेवा करेंगे। हमें उसे प्रभु के रूप में ग्रहण करना है और अपने सिर के रूप में मानना आवश्यक है (इफिसियों 5:24)।

सारांश

बपतिस्मा एक शारीरिक कार्य है जिसके सज़्बन्ध तथा अर्थ आत्मिक हैं। इनके बिना बपतिस्मे का कोई महत्व नहीं है। बाइबल के परिप्रेक्ष्य में बपतिस्मा लेने के लिए, हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि हम पापों की क्षमा पाकर परमेश्वर के साथ बिगड़े सज़्बन्ध को सुधार रहे हैं। हमारे लिए पापपूर्ण जीवन को छोड़ने और अपने एकमात्र प्रभु और मालिक के रूप में यीशु के प्रति समर्पण के नये जीवन में प्रवेश करना आवश्यक है।

पाद टिप्पणी

[1]यीशु ने कहा, "मैं वही हूं।" यूनानी भाषा में "वही" नहीं है (यूहन्ना 8:24; देखिए 8:28, 58; 13:19) अत: हिन्दी बाइबल में पढ़ना चाहिए कि यीशु ने कहा, "मैं हूं।"

सुसमाचार व बपतिस्मा

सुसमाचार को सुनकर विश्वास किए बिना हमारा बपतिस्मा व्यर्थ है। इसलिए पौलुस ने लिखा था, "ज़्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है" (1 कुरिन्थियों 1:17)। पौलुस यह नहीं कह रहा था कि बपतिस्मे की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वह सुसमाचार के महत्व पर ज़ोर दे रहा था। इस आयत में यूनानी मुहावरे "नहीं, बरन" का अर्थ यह नहीं था कि पौलुस ने किसी को बपतिस्मा नहीं देना था, ज़्योंकि बपतिस्मा तो दिया (1 कुरिन्थियों 1:14-16); बल्कि इसका अर्थ यह था कि उसे सुसमाचार पर ज़ोर देना चाहिए था।[1]

पौलुस सिखा रहा था कि बेशक बपतिस्मा सुसमाचार का एक भाग है, परन्तु पूर्ण सुसमाचार के बिना यह किसी का उद्धार नहीं कर सकता, ज़्योंकि उद्धार की सामर्थ सुसमाचार में ही है (रोमियों 1:16; इफिसियों 1:13), न कि बपतिस्मे में। हमारा उद्धार विश्वास करने, मन फिराने, अंगीकार करने और बपतिस्मे से नहीं होता। उद्धार तो यीशु के लहू से ही होता है; परन्तु उद्धार तक पहुंचाने वाले मन फिराव, अंगीकार और बपतिस्मे के बिना यीशु का लहू हमारा उद्धार नहीं करेगा। हमें सुसमाचार को मानने के लिए परमेश्वर का वचन सुनना आवश्यक है।

उद्धार के "ज़्या ?" (जो) और "कब ?" में अन्तर है। यीशु की मृत्यु में बहाया गया उसका लहू ही है *जो* हमारा उद्धार करता है। एक पुराने भजन का यह प्रश्न कि "दिल के दाग़ को धोवे कौन ?" और फिर उसका उज़्र कि "लहू जो कि क्रूस से जारी" बिल्कुल सही है। हमारा किया गया कोई भी कार्य हमें उद्धार नहीं दिला सकता (इफिसियों 2:8, 9); उद्धार केवल यीशु का लहू ही दिला सकता है (मज़ी 26:28; 1 पतरस 1:18, 19)।

यीशु का लहू हमारे पापों को *कब* धोता है ? जब हम उसकी आज्ञा मानते हैं अर्थात विश्वास करके, मन फिराते और बपतिस्मा लेते हैं। यीशु ने हमारे पाप का कर्ज़ चुका दिया है, परन्तु हमारे लिए अपनी मृत्यु के द्वारा उसके द्वारा उपलज़्ध कराए उद्धार को पाने के लिए उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है (इब्रानियों 5:9)। इसलिए, उद्धार में ''ज़्या ?'' और ''कब ?'' वह समय है जब हम उसकी आज्ञा मानते हैं।

सही परिप्रेक्ष्य में, विश्वास करना, मन फिराना, अंगीकार करना, और बपतिस्मा लेना सुसमाचार को ग्रहण करने के लिए अनिवार्य हैं। सुसमाचार वह सच्चाई है कि कैसे यीशु ने अपने आपको हमारे पापों के लिए दे दिया, पाप का दाम चुका दिया, अपने लहू से हमारे पापों को क्षमा कर सकता है, और अब कैसे संसार के हाकिम के रूप में हमारी सिफ़ारिश करने को सर्वदा जीवित है। हमारे लिए उसने जो विजय पाई है वह हमारी ही विजय है हम अपने आप के लिए मर जाएं और अपने जीवनों को उसे प्रभु और हाकिम जानकर समर्पण कर दें।

पाद टिप्पणी

[1]यूनानी भाषा में यही संरचना, जिसका अर्थ है कि पहली अभिव्यज़्ति पर दूसरी अभिव्यज़्ति जितना ज़ोर नहीं दिया गया, यूहन्ना 6:27; 12:47; 1 तीमुथियुस 5:23; 1 पतरस 3:3, 4 और अन्य कई जगहों पर मिलती है।